पाठ–एक

क्या परमेश्वर के पास वास्तव में कोई योजना है?

"ऐसा प्रतीत होता है कि अनेकानेक बातें संयोग से हुआ करती हैं?

मिस्र में बड़े-बड़े स्मारक हैं जिन्हें पिरामिड कहते हैं। ये विशाल पिरामिड हज़ारों वर्ष से स्थिर खड़े हैं। इनके पत्थर आपस में मज़बूती से जोड़े गए हैं कि इन्हें खड़े रहने के लिए गारे (मसाले) की अक्सर आवश्यकता ही नहीं। क्या इनका निर्माण पत्थरों का ढेर लगाकर ही कर दिया गया था? नहीं, हम जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ।

कहीं न कहीं प्रवीण निर्माता था जो बनाने के पहले ही जानता था कि निर्मित स्मारक का रूप कैसा होगा। उसने एक नक्शा (खाका) बनाया। उसने पूरी योजना बनाई और यह निश्चय कर लिया कि पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। तब हज़ारों पुरुषों को काम पर लगाया और निर्देश दिए कि प्रत्येक आदमी अपना काम करेगा। इस में शंका नहीं कि उनके एक साथ कार्य करने से कई समस्यायें भी उठ खड़ी हुईं। कुछ तो काम छोड़कर भाग गए और कुछ ने अपना कार्य ठीक से नहीं किया। परन्तु मालिक जो निर्माता था वह निर्माण कार्य में तब तक लगा रहा जब तब कि पिरामिड बनकर तैयार न हो गए।

कल्पना कीजिए पत्थरों के विशाल ढेरों के साथ हज़ारों आदमी! यदि योजना (खाका) न बनायी गयी होती तो क्या बनता? इस पाठ में आप परमेश्वर की योजना (रूपरेखा, खाका) के विषय सीखेंगे। इससे भी अधिक आप यह जानने पाएँगे कि आपके लिए परमेश्वर के पास एक योजना, एक नक्शा है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- प्रत्येक वस्तु के लिए परमेश्वर के पास एक नक्शा (योजना) है।
- लोगों के लिए परमेश्वर के पास नक्शा (योजना) है।
- दूसरों ने परमेश्वर की योजना का अनुभव किया है।
- आप भी परमेश्वर की योजना का अनुभव कर सकते हैं।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- "परमेश्वर की योजना" इस विचार को समझाने की व्याख्या करने में।
- लोगों के लिए परमेश्वर की योजना की विशेषताओं का वर्णन करना।

- बाइबल के चरित्रों के जीवित-अनुभवों से परमेश्वर की योजना के विषय में मुख्य-मुख्य बातों को जानना।

प्रत्येक वस्तु के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है

विषयवस्तु (उद्देश्य) । : परमेश्वर की योजना के नमूने।

प्रत्येक वस्तु के लिये परमेश्वर के पास एक नक्शा, एक योजना है। उसने अय्यूब को बताया था कि उसके पास नक्शा (योजना) है कि समुद्र कितने गहिरे हों, सूर्य कब उदय हो तथा पृथ्वी का आकार कितना बड़ा हो। उसने तारों को बनाया तथा प्रकाश की रचना की। परमेश्वर ने यह भी ठहराया कि जानवर कैसे जन्म दें। उसने बैल में बल भरा और घोड़े में प्रताप। उसने उकाब पक्षी को बनाया कि ऊँचे से ऊँचे पर्वतों पर उड़े (अय्यूब 38, 39)।

परमेश्वर ने प्रत्येक वस्तु को रूप दिया और उसकी रूपरेखा में मनुष्य सबसे उत्तम भाग है। उसने मनुष्य को बनाने, उसके रूप को निर्धारित करने के लिए विशेष ध्यान दिया, क्योंकि मनुष्य के लिए उसके पास एक विशेष अभिप्राय है।

परमेश्वर ने मनुष्य जाति को जानवरों से समान नहीं पर अधिकाधिक अपनी समानता में बनाया। परमेश्वर संगति चाहता है, उसने हमको बनाया कि हम उसकी संगति का आनन्द उठायें। परमेश्वर सोचता है और योजना बनाता है; उसने हमें बनाया कि हम भी सोच सकें और योजना बना सकें। परमेश्वर प्रेम करता है, उसने हमें बनाया कि हम भी प्रेम कर सकें। परमेश्वर के पास चुनाव है; उसने हमें बनाया कि हम भी चुन सकें।

मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है, परन्तु प्रत्येक मनुष्य नहीं चुना गया कि वह करे जो परमेश्वर की योजना में है। सच तो यह है कि बाइबल कहती है कि प्रत्येक जन जो वह करना चाहता है वही चुनता है (रोमियों 3:23)। परन्तु इससे परमेश्वर की योजना नहीं बदली! आपने अपने अनुभव से सीखा है कि परमेश्वर ने आपको और सब मनुष्यों को यह अवसर प्रदान किया है कि उसके उद्धार के द्वारा उसकी महान योजना के अंग बन सकें। हम उसके साथ सहयोग कर सकते हैं और एक दिन आएगा कि हम उसके अनुरूप होंगे।

आपके लिए कार्य

आपके लिए कार्य के इस भाग में जो प्रश्न या अभ्यास दिये गये हैं वे आपको इस पाठ को दोहराने और उसे अपने जीवन में लागू करने हेतु सहायता करेंगे। प्रत्येक का हल करने के लिए दिए गए निर्देशों का पालन करें। जब आप से कहा जाए तब आप अपने उत्तर नोट-बुक में लिखें। यदि आप आवश्यकता महसूस करें तो इस अध्ययन पुस्तक के आरंभ में दिए गए भाग–**अध्ययन के प्रश्नों का उत्तर कैसे दें** की फिर से पढ़ लें।

1 अपनी बाइबल में से उत्पत्ति का अध्याय 1 पढ़ें। उस अध्याय में कौन सी दो बातों के लिए परमेश्वर ने नक्शा (योजना बनाई) बनाया उसका नाम लिखें।

.....

2 हम जानते हैं कि परमेश्वर का चुनाव है। एक चुनाव का वर्णन करें जो आपने अपने लिए किया है, जो यह दर्शाता है कि चुनाव करने की योग्यता के अनुसार आप भी परमेश्वर के अनुरूप हैं।

.....

अपने उत्तरों की जाँच इस पाठ के अन्त में दिए गए सही उत्तरों से करें।

मनुष्यों के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है

विषयवस्तु 2. मनुष्यों के लिए परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) की विशेषताओं का वर्णन करें।

किसी वस्तु की रूपरेखा (ढाँचे) की कोई आकृति या विशेषताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए एक घर की रूपरेखा में दीवारें, खिड़कियाँ, दरवाज़े और कमरों की योजना सम्मिलित होती है। हमने बताया है कि लोगों के लिए परमेश्वर के पास एक रूपरेखा है। इस रूपरेखा की क्या विशेषताएँ हैं?

परमेश्वर की रूपरेखा का आरंभ ज्ञान से होता है

परमेश्वर की प्रजा के अगुवों में से दाऊद भी एक था। उसने बाइबल के अनेकों भजन लिखे हैं। भजन संहिता 139 में उसने कहा कि परमेश्वर उसके कार्यों और विचारों को जानता था। परमेश्वर दाऊद के बोलने से पहले ही जानता था कि वह क्या कहेगा। परमेश्वर ने दाऊद को बनाया। परमेश्वर ने उसे उसकी माता के गर्भ में रचा।

आपके लिए कार्य

3. नीचे दिए गए प्रत्येक सन्दर्भ (पद) को अपनी बाइबल में से पढ़ें। प्रत्येक सन्दर्भ के सामने व्यक्ति की उस बात को लिखें जिससे मालूम देता है कि परमेश्वर उस व्यक्ति को जानता था। परमेश्वर आपके विषय में भी इन बातों को जानता है।

(अ) अय्यूब 23:10 .....
(ब) भजन संहिता 31:7 .....
(स) भजन संहिता 103:14 .....
(द) भजन संहिता 139:16 .....
अपने उत्तरों की जाँच कर लें।

परमेश्वर ने न केवल दाऊद को बनाया, उसने आपको भी बनाया। हालाँकि परमेश्वर दाऊद के विषय में सब कुछ जानता था फिर भी उसने उससे प्रेम किया। हालाँकि वह आपके विषय में भी सब कुछ जानता है फिर भी वह दाऊद के समान आपको प्रेम करता है। उसने आपके जन्म, आपके उद्धार, आपके जीवन और आपके अनन्तकाल के जीवन की योजना बनाई है। यदि आप परमेश्वर के साथ सहयोग करें और उसकी योजना को अपने जीवन में लागू होने दें तो वह प्रभावशाली होकर तत्परता से आपकी अगुवाई करेगा (फिलिप्पियों 2:13)।

परमेश्वर की रूपरेखा में विविधता सम्मिलित है

संसार में लोग भिन्न-भिन्न जाति और नागरिकता के हैं। तरह-तरह के बाल, आँखों की आकृति तथा चमड़ी के रंग पर विचार करें। एक ही जाति में हम लोगों में भिन्नता देखते हैं। हमारे सोचने का ढंग भिन्न है, हम भिन्न-भिन्न तरह के भोजन पसन्द करते हैं। क्या यह एक उत्तम बात नहीं कि परमेश्वर ने हमें मनुष्य रूप में बनाया? और हमें अलग-अलग व्यक्तित्व एवं अस्तित्व प्रदान किया।

यदि आप एक परिवार में देखें तो आप पाएँगे कि बच्चे भिन्न दिखाई देते हैं। कुछ दुबले-पतले होते हैं और कुछ मोटे। कुछ के बाल एकदम काले रंग के होते हैं तो कुछ के हल्के या भूरे रंग के। परन्तु माता-पिता जो बच्चों से प्रेम करते हैं उनके लिए ये

भिन्नताएँ कुछ महत्त्व नहीं रखतीं। माता-पिता के लिए महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि बच्चे उनके अपने हैं।

वास्तविक सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर ने ये रूपरेखाएँ बनाई हैं जिन्हें हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं। उसने ऐसी योजना बनाई कि हम भिन्न हों. हमारा अपना व्यक्तित्व हो। यह उसके बनावट की एक आश्चर्यजनक बात है। जब कभी हम यह सोचते हैं कि दूसरा जन हमारे समान नहीं है तो यह इसलिए कि यह एक सत्य है।

आपके लिए कार्य

4 उस तरीके का नाम बताइए जिसके द्वारा आप अपने मित्रों से भिन्न हैं।

.....

परमेश्वर की रूपरेखा में एक स्तर (मानक) सम्मिलित है

क्या हम पुनः पिरामिड के विषय में सोच सकते हैं, जिसके विषय में हमने बातें की थीं? यह आवश्यक नहीं था कि सब पत्थर एक से हों। ये विभिन्न रूप और भिन्न भिन्न नाप के हो सकते थे। उनके लिए यह आवश्यक था कि वे आपस में ठीक-ठीक लगाए जा सकें। उन सबका इस तरह बनाया जाना आवश्यक था कि वे सब उपयोग में आ सकें। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक की बनावट निर्माण करने वाले के नक्शे के अनुसार हो।

इसी प्रकार हमें भी परमेश्वर की बनावट के अनुरूप बनना आवश्यक है और इस बनावट के नक्शे में स्तर या नमूना विद्यमान है। इफिसियों 4:13 हमें बताता है कि हमारे जीवन का स्तर

"मसीह के पूरे डील-डौल तक" बढ़ना है। यह वह लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए परमेश्वर अपने वचन की शिक्षा के द्वारा अगुवाई करता है। जब हम उसे अपने जीवन में कार्य करने का अवसर देते हैं तब वह हमें अपने पुत्र के स्तर और रूप के अनुरूप परिवर्तित करता है। फिर हम तो उसकी सन्तान हैं। हमें चाहिए कि उसके सदृश बनें।

इसका यह अर्थ नहीं है कि हम अपने व्यक्तित्व को खो देंगे। इसी कारण, परमेश्वर हमें मसीह का जुड़वाँ नहीं बल्कि उसका "भाई" (रोमियों 8:29) बनाता है। जब बच्चे बड़े होते हैं तो वे बड़े होकर अपने माता-पिता के समान परिपक्व और समझदार हो जाते हैं। वे यह भी समझने लगते हैं कि उनके माता-पिता क्यों उन्हें अनुशासित किया करते थे, शिक्षा देते थे और उन्हें समस्याओं से जूझने के लिए छोड़ दिया करते थे। पर, फिर भी उनका अपना व्यक्तित्व है।

यदि हम ईमानदारी से यीशु मसीह के आज्ञाकारी होना सीख लें तो एक दिन हम उसके समान होंगे। इसका अर्थ यह है कि वर्तमान में हम जिन सीमाओं में बंधे हैं वे हमसे अलग कर दी जाएँगी। हम परमेश्वर को पूर्ण रूप से, जैसा वह है, जान सकेंगे। हम उसके अभिप्राय को भलीभाँति समझने पाएँगे। हम उसे सिद्ध व सच्चे प्रेम से प्रेम करेंगे। जो मसीह की महिमा है, फिर वह हमारी भी होगी (रोमियों 8:30)

जब हम उसके अनुरूप होंगे, जब हम उसे उसी रीति से जान जाएँगे जैसा कि वह हमें जानता है, जब उसकी महिमा हमारी होगी तब हमारी उसके साथ पूर्ण व सिद्ध सहभागिता होगी।

5 उस कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ जो यह बताता है कि हमारे जीवनों के लिए मसीह का स्तर क्या है।

(अ) उसन परमेश्वर की इच्छा पूरी की।

(ब) वह यहूदी जाति का था।
(स) उसने सत्य बोला।
(द) उसने अपना बचपन एक छोटे गाँव में बिताया।

परमेश्वर की रूपरेखा मैत्री या एकरूपता लाती है

हम इस तरह से बनाए गए हैं कि एक साथ परमेश्वर की योजना में सम्मिलित (फिट) हो सकें। हो सकता है हम निर्बल हों जहाँ दूसरे शक्तिशाली हैं। जहाँ दूसरे निर्बल हों और हम शक्तिशाली।

बाइबल में, एक दूसरे के साथ सम्बन्धों को समझाने के लिए अनेक उदाहरण दिये गये हैं। परमेश्वर के परिवार के होने के नाते हम अपने पिता परमेश्वर के गुणों को अपने जीवन में लेते हैं और एक दूसरे के साथ सहभागिता का आनन्द उठाते हैं (इफिसियों 2:11-19)। एक साथ मिलकर हम उस मन्दिर रूपी भवन के खण्ड (ब्लॉक) हैं जिसमें परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा निवास करता है (इफिसियों 2:20-22)। एक साथ मिलकर हम मसीह की दुल्हिन बनते हैं (2 कुरिन्थियों 11:2, प्रकाशित वाक्य 21:9)। एक साथ मिलकर हम सेना बन जाते हैं (इफिसियों 6:10-18)।

यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की योजना अथवा मनुष्यों के लिए उसकी रूपरेखा एक साथ मिलने अथवा मैत्रीपूर्ण योजना है—उसके साथ एक होना तथा दूसरों के साथ एक होना। यह विवेकपूर्ण है कि परमेश्वर ने जो योजना दूसरों तथा अन्य सृष्टि के लिए बनाई या फिर वह व्यक्ति विशेष के लिए बनाई हो उसमें तनिक भी विरोधाभास नहीं है। सब कुछ उसकी योजना के अनुरूप है।

हमारे लिए परमेश्वर क्या चाहता है—जब हम इसकी खोज करना आरंभ करते हैं तो हम यह पाते हैं कि उसके मन में सदा दो बातें रहती हैं: (1) मसीह के साथ हमारा व्यक्तिगत (व्यक्तिक)

विकास हमारा नमूना हो तथा (2) दूसरों के साथ हमारे व्यक्तिगत सम्बन्धों का विकास जो परमेश्वर की योजना में सहायक बनते हैं।

आपके लिए कार्य

6 निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण यह दर्शाता है कि परमेश्वर की योजना में मैत्री-एक साथ मिलना सम्मिलित है?

(अ) जोआओ ने यह महसूस किया कि परमेश्वर उसके बारे में सब कुछ जानता है—अच्छा भी और बुरा भी।

(ग) मैनुएल और बेरनाबे दोनों ही विश्वासी हैं परन्तु दो विभिन्न जाति से सम्बन्ध रखते हैं।

(स) पीता ने अपने पढ़ाने की योग्यता को प्रयोग में लाना सीखा कि जैनी की बाइबल अध्ययन कराने में सहायता करे।

7 नीचे दिये गये सन्दर्भों में प्रत्येक बाइबल के पद को पढ़ लीजिये। तब इसका मिलान परमेश्वर की रूपरेखा के पहलू से करें जिसमें पद का सही अर्थ है। सही अंक को रिक्त स्थान पर लिख दें।

(अ) यूहन्ना 10:14-15	1) परमेश्वर का ज्ञान
(ब) यूहन्ना 17:21	2) विविधता

(स) 1 कुरिन्थियों 12:14 3) स्तर
(द) फिलिप्पियों 2:5 4) एकरूपता
(य) 1 यूहन्ना 3:16

8 मान लीजिए किसी मित्र ने आपसे यह प्रश्न किया: लोगों के लिये परमेश्वर की रूपरेखा क्या है? आप अपनी नोट बुक में, उत्तर के लिये परमेश्वर की रूपरेखा (बनावट) से सम्बन्धित चार गुण लिखिये।

अन्य (दूसरों) ने परमेश्वर की रूपरेखा (योजना रूपी नक्शे) का अनुभव किया

विषयवस्तु 3. परमेश्वर की रूपरेखा के विषय में निष्पादन को पहिचानना जो उन लोगों के जीवन में देखी जा सकती है जिन्होंने इसका अनुभव किया।

बाइबल हमें ऐसे अनेक लोगों के विषय में बताती है जिन्होंने अपने अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य निष्पादन को पूरा होते देखा था। आइये, कुछ लोगों के जीवन-वृतान्त में परमेश्वर की योजना (रूपरेखा) के अनुभवों पर ध्यान दें।

यीशु के शिष्य

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने अपने सब अनुयायियों में से बारह शिष्यों को चुना कि वे उसके साथ रहें (मरकुस 3:13-15)। यह उसकी योजना का एक प्रमुख कार्य था—वह उनके साथ रहेगा और उनके साथ रहने के द्वारा उनको बदल देगा। उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताकर सावधानीपूर्वक उनका चुनाव किया था (लूका 6:12-16)। उसके पास एक योजना थी: अपने पिता के कार्य को करना जिसे करने के लिए पिता ने उसे भेजा था (यूहन्ना 17:4)

अपने अनुयायियों के लिए मसीह की योजना में अन्तिम लक्ष्य यह था कि वे एक दूसरे के साथ तथा स्वयं उसके साथ पूर्ण एकता में रहें (यूहन्ना 17:20-23 । फिर भी, जब हम बाइबल में इन विभिन्न व्यक्तियों के बारे में पढ़ते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि वे सब एक समान नहीं थे।

दो को "गर्जन के पुत्र" (मरकुस 3:17) के रूप में जाना गया। इनमें से एक यूहन्ना को कहा गया, "एक, जिससे यीशु प्रेम रखता था" (यूहन्ना 13:23)। पतरस, जैसा कि दिखाई देता है, कई बार दूसरों से अधिक उसके प्रति धैर्य रखा गया। नतनएल के लिए कहा गया कि उसमें कुछ भी कपट नहीं (यूहन्ना 1:47)।

ये सब भिन्न-भिन्न व्यवसाय और पृष्ठभूमि से आए थे—मछली पकड़ने वाले से लेकर कर वसूल करने वाले। और इन्होंने अपना व्यक्तिगत अस्तित्व (व्यक्तित्व) बनाए रखा। फिर भी मसीह के साथ रहने के कारण वे एकता में लाए गए। वे "बारह प्रेरित" कहलाए। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि इनके नाम परमेश्वर के नगर की नींव पर लिखे हुए थे (प्रकाशित 21:14)।

बारहों प्रेरितों ने मसीह के साथ अनेकानेक अनुभव प्राप्त किए। कभी तो वे आराम में रहते तो कभी थक जाते थे। कई अवसरों पर आश्चर्यकर्म के द्वारा उन्हें भोजन प्राप्त हुआ; अन्य अवसरों पर वे अपना भोजन साथ लाये। उन्होंने महान विजयों का आनन्द उठाया; वे हतोत्साहित (विफल) भी हुये। परन्तु मसीह के साथ रहने के कारण परमेश्वर की योजना उनके जीवन में पूरी हुई।

आपके लिए कार्य

9 यीशु के शिष्यों का अनुभव दर्शाता है कि परमेश्वर की योजना को जानने के लिये सबसे मुख्य बात यह करना है—
(अ) गरीबी और दुर्भाग्य को सहन करना।
(ब) महान आश्चर्यकर्मों और विजयों का अनुभव करना।
(स) निरन्तर मसीह के साथ बने रहना।

10 यीशु के प्रति पतरस का व्यवहार यूहन्ना के व्यवहार से भिन्न था। परमेश्वर की रूपरेखा के सम्बन्ध में यह उदाहरण किस बात का गुण दर्शाता है—
(अ) विविधता।
(ब) ज्ञान
(स) एक साथ रहना (मैत्रीभाव)।

पौलुस प्रेरित

परमेश्वर का एक महान व्यक्ति जिसे हम पौलुस प्रेरित के नाम से जानते हैं। वह अपने पहिले के जीवन में तारसुस का शाऊल के नाम से जाना जाता था। एक समय था जब वह यीशु मसीह और उसके अनुयायियों से घृणा करता था। वह मसीहियों की हत्या का भी जिम्मेवार रहा था, क्योंकि उसे सिखाया गया था कि जो मसीही बनते हैं वे परमेश्वर की निन्दा करते हैं। अन्ततः परमेश्वर व्यक्तिगत रीति से शाऊल से बोला। यह उस समय हुआ जब शाऊल मसीह के अनुयायियों को गिरफ़्तार करने एक नगर को जा रहा था।

बाद में, जब पौलुस ने अपने पूर्व के जीवन पर दृष्टि की तो उसने अपने आपको पापियों में सबसे बड़ा कहा (1 तीमुथियुस

1:15)। यदि परमेश्वर का हस्तक्षेप उसके जीवन में कार्यकारी सिद्ध हो सकता है तो यह प्रत्येक उस जीवन में भी कार्यकारी होगा जो उसके प्रति समर्पण को तैयार है। 2 तीमुथियुस 4:7-8 में पौलुस अपने जवान मित्र तीमुथियुस को उस विश्वास के प्रति बताता है जो बुढ़ापे में उसके अन्दर है। उसने कहा कि मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है और उस विश्वास में स्थिर रहा हूँ। परिणामस्वरूप, उसे निश्चय था कि न केवल उसके लिए परन्तु उन सब के लिए भी जो ठीक ऐसा ही करते हैं पुरुस्कार (प्रतिफल) सुरक्षित रखा है।

आपके लिए कार्य

11 निम्नलिखित तीन टिप्पणियाँ पौलुस के जीवन पर की गईं। इनमें से एक टिप्पणी चुनें जिसमें पौलुस के जीवन में परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) का सबसे सुन्दर चित्रण मिलता है।

(अ) कुछ मसीहियों ने अपने जीवन का अधिकांश भाग परमेश्वर की योजना का विरोध करने में व्यतीत किया।

(ब) व्यक्ति की पूर्व की असफलताओं के उपरान्त भी परमेश्वर की सिद्ध व पूर्ण इच्छा पूरी हो सकती है।

(स) प्रत्येक विश्वासी को यह जानना चाहिये कि उसके लिये असफलताओं का अनुभव करना संभव है।

आप परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) का अनुभव कर सकते हैं

विषयवस्तु-4. उस दशा का वर्णन करना जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी योजना को आपके जीवन में पूरी करता है।

परमेश्वर की योजना आपके लिए भी ठीक वैसी ही पूर्ण और व्यक्तिगत है जैसी कि यह बारह शिष्यों में से प्रत्येक के लिए थी। जैसा कि निकट का सम्बन्ध उसके शिष्यों के साथ उसका था, ठीक वैसी ही निकटता वह आपसे भी चाहता है (यूहन्ना 17:21)। जिस प्रकार और जिन परिस्थितियों में उसने चेलों के लिए किया, ठीक उसी प्रकार वह आपके लिए भी कर रहा है। और जैसा कि पौलुस का जीवन दर्शाता है, वह आपके जीवन में भी अपने अभिप्राय को पूरा करना चाहता है, चाहे आप जीवन में कितने ही असफल क्यों न रहे हों।

एक बार, जब आप यह जान लेते हैं कि आपके जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक नक्शा है, आपका दृष्टिकोण बदल जाता है। आप अपने जीवन में होने वाली बातों को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखना आरम्भ करते हैं।

एक बढ़ई अपनी रुखानी से अथवा आरी से लकड़ी को एक नया रूप दे रहा है। वह उसे रेतमाल से चिकना करता है। एक हीरा अपनी मूल्यवान स्थिति में तब तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि जौहरी छैनी से उसको तराशकर उसके व्यर्थ भाग को अलग नहीं कर देता। हो सकता है परमेश्वर आपके जीवन पर विशेष ध्यान देकर कार्य कर रहा हो। हम अपने आप में हथौड़े मारे जाने, काटे जाने तथा चिकने किये जाने को महसूस किया करते हैं। साधारणतः तो हम यह सोच लेते हैं कि ये सब बातें "भाग्य", लोगों, या परिस्थिति के कारण होती हैं। हमारे सोचने का ढंग बदल सकता है यदि हम यह विश्वास कर लेते हैं कि यह हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य करने का तरीका है।

रोमियों 8:29-30 हमें उस कार्य प्रणाली को बताता है जिसमें हमारे जीनव की घटनायें फिट होती हैं। स्मरण रखें कि हमने उस सत्य के विषय में सीख लिया है कि परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है? यहीं से हमारे जीवनों के लिए उसकी योजना का आरंभ होता है:

"क्योंकि जिनके विषय में उसे पूर्वज्ञान था, उसने उन्हें पहिले से ठहराया भी कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में हो जाएँ, जिससे कि वह बहुत-से भाइयों में पहिलौठा ठहरे; फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।" (नया अनुवाद)।

जब आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करते जाएँगे तो आप ऐसे तरीकों को देखने पाएँगे जिन्हें हमारे जीवन परिवर्तन के लिए परमेश्वर प्रयोग में लाता है। विशेषकर, आप यह देखेंगे कि कैसे कुछ परिस्थितियाँ परमेश्वर की इच्छा जानने में हमारे लिए सहायक बन सकती हैं। परन्तु आरंभ से ही इस एक बात को मन

में रखें: हर एक परिस्थिति से परमेश्वर महान और बढ़कर है। वह आपके ज़ीवन में होने वाली प्रत्येक बात को अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयोग में ला सकता है यदि आप उसके साथ सहयोग करें (रोमियों 8:28)।

आपके लिए कार्य

12 रोमियों 8:28 पढ़ें। अपनी नोट-बुक में अपने जीवन की एक परिस्थिति या दशा का वर्णन करें। तब अपने आप से यह प्रश्न पूछें : "परमेश्वर मेरे लिए अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए इस परिस्थिति को किस प्रकार से इस्तेमाल कर सकता है?" प्रश्न का उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए।

पाठ दो में, आपके लिए परमेश्वर का अगला क़दम तथा वह आपसे कैसे बात करना चाहता है विषयों पर ध्यान देंगे। अध्ययन आरम्भ करने से पहले भजन संहिता 139 को पढ़ें और परमेश्वर के उस नक्शे (रूपरेखा) पर मनन कीजिए जो अति सुन्दर ढंग से आपके जीवन के लिए निर्धारित किया गया है।

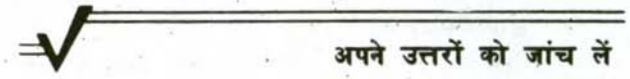

अपने उत्तरों को जांच लें

आपकी अध्ययन पुस्तक में दिए गए प्रश्नों या अभ्यासों के उत्तर क्रम से नहीं दिए गए हैं। यह इसलिए किया गया है कि आप अपने अगले प्रश्न का उत्तर पहिले से न देखें। जिस अंक (प्रश्न) का उत्तर देखना हो उसी को देखिए।

7 (अ) परमेश्वर का ज्ञान [1]
(ब) एक साथ रहना [4]
(स) विविधता [2]
(द) स्तर [3]
(य) स्तर [3]

1 आपका अपना उत्तर। उत्पत्ति 1 में अनेक बातों को बताया गया है जिन्हें परमेश्वर ने आकार दिया और रचना की: प्रकाश तथा अन्धकार (पद 3-4), समुद्र और भूमि (पद 9-10) तथा मनुष्य जाति (पद 26-27)।

8 आपके उत्तर में ज्ञान, विविधता, स्तर एवं एक साथ रहना (मैत्रीभाव) के पहलू सम्मिलित होना चाहिए जैसा कि पाठ में वर्णन है।

2 आपका अपना उत्तर। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने हेतु आपका निर्णय दर्शाता है कि आप चुनाव करने (चुनने) के योग्य हैं। यह तरीका है जिसमें परमेश्वर ने आपको अपने अनुरूप बनाया है।

9 (स) निरन्तर मसीह के साथ बने रहना।

3 (आपके अपने शब्दों में)

(अ) उसके क़दम या मार्ग।
(ब) उसके संकट।
(स) किस से उसने बनाया; कैसे उसने आकार (रूप) दिया।
(द) उसकी आयु के दिन।

10 (अ) विविधता।

4 आपका अपना उत्तर।

11 (ब) व्यक्ति की बीती (पूर्व की) असफलताओं के उपरान्त भी परमेश्वर की सिद्ध व पूर्ण इच्छा पूरी हो सकती है।

5 (अ) उसने परमेश्वर की इच्छा पूरी की।
(स) उसने सत्य बोला।

12 आपका अपना उत्तर। परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है इस बारे में और अधिक जागरुक रहें।

6 (स) पीता ने यह सीखा कि अपनी सिखाने की योग्यता को जैनी को बाइबल अध्ययन कराने में कैसे उपयोग में लाए।